International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 909-913

वर्तमान राजनैतिक प्रदूषण

डॉ0 आशुतोष सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र विभाग, रामप्रसाद सिंह पी0जी0 कालेज सिसवां महराजगंज, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत।

1. प्रस्तावना

वर्तमान समय घोर भौतिकवाद का समय है। इसे विज्ञान युग, मशीनी युग तथा तकनीकी युग भी कह सकते हैं। येन केन प्रकारेण आवश्यकता से अधिक धन, प्रतिष्ठा, महत्वपूर्ण पद आदि प्राप्त करना वर्तमान की विशेषतायें हैं।

आजादी के बाद हमने अपना शासन पाया जिसे हम स्वतंत्रता कहते हैं। वर्तमान में यह स्वतंत्रता भी प्रदूषण की चपेट में है। शासक, शासन और शासित जनता तीनों की सहजता पर प्रश्नचिन्ह है। शासक मनमाना है, शासन अनजाना है तो शासित जनता का भी विचित्र कारनामा है। नीति, नियम, कानून धर्म सबकुछ शब्दों में सीमित हो गये हैं। असीमित है तो अपना स्वार्थ। नेता पद लोलुप होकर जनता के हाथों से मत छीन रहा है। वह खींचता है अपनी कुर्सी की ओर, इतनी शक्ति लगाता है कि जनता झटके से दूर गिर जाती है, फिर वह गिरती ही जाती है, नेता उठता जाता है। विशाल जन–समूह मत नजर आता है इंशान नहीं। इस प्रजातंत्र में प्रजा का तंत्र नहीं है, प्रजा के लिये तंत्र नहीं है, तंत्र केवल राजा का है, राजा के लिये है। आज राजनीति में जातिवाद, क्षेत्रवाद, मतदाता उत्पीड़न, मतदान केन्द्र अधिग्रहण, प्रत्याशियों की हत्यायें, घोर पद लोलुपता, रिश्वतखोरी के नाना कांड, सदनों में हिंसात्मक एवं पूर्ण तथा अमर्यादित व्यवहार ही प्रमुख क्रिया–कलाप है। ऐसी स्थिति में वर्तमान राजनीति का अध्ययन अति महत्वपूर्ण है।

राजनीति तथा प्रदूषण की संकल्पता

वर्तमान समय में राजनीतिज की भाग्य जनता के हाथों में नहीं है जनता की भाग्य राजनेताओं के हाथों में है। पूरी राजनीति कुनीति हो गयी है। ऐसे राजनैतिक प्रदूषण की संकल्पता को निम्नवत स्पष्ट कर सकते हैं।

1.1. राजनीति : राजनीति में दो प्रमुख शब्द है 'राज' और 'नीति'। इसका अर्थ होता है 'राज की नीति'। राजा शासक होता है। वह आदेश देता है। वह नियंत्रण रखता है। इस प्रकार राजनीति को 'शासन करना' कह सकते हैं। इसकी परिभाषाओं में कहा गया है कि 'राजनीति एक ऐसी कला है जिसके द्वारा प्रत्येक समूह दूसरे समूह पर किसी न किसी तरह नियंत्रण रखकर अपने हितों को निरन्तर आगे बढ़ाने का प्रयास करता है। ''Politics as the Art of Influencing Manipulating or Controlling Major Groups as to Advance the Purpose of some against the opposition of others''[1]

एक दूसरी परिभाषा के अनुसार, ''राजनीति सम्भाव्य की कला है।'' (Politica is Essentially the Art of The Possible) ।[2]

इन परिभाषाओं में राजनीति को एक कला का रूप दिया गया है। कला का अर्थ है 'प्रयोगात्मक जीवन' (Practical Life) जीवन में 'स्वार्थ' का बड़ा महत्व है। स्वार्थ (स्व+अर्थ) में संघर्ष, शासन, नियंत्रण, निवेदन सब कुछ हो सकता है। इसकी पूर्ति व्यक्ति समूह के नेतृत्व द्वारा करता है जिसे राजनीति का रूप मान सकते हैं। राजनीति को सम्भाव्य की कला भी कहा गया है। सम्भव तो अच्छा–बुरा सब होता है। उद्देश्य स्वार्थ–पूर्ति है। इसका मतलब दोनों ढंग से स्वार्थपूर्ति राजनीति हुई।

वस्तुतः राजनीति 'सर्वोत्तम सम्भव' (The Best Possible) की प्राप्ति है। सर्वोत्तम तो आदर्श है। राजनीति मात्र आदर्श ही नहीं यथार्थ भी है। यथार्थ अर्थात् और यथार्थ का संगम है।' राजनीति तो हमारी काया ही है जहाँ एक 'शासक' (मस्तिष्क) है तथा अनेक अंग उसके अनुशासन में है। शरीर को एक 'प्रदेश' मानकर यदि 'शासक', 'शासन' और 'अनुशासन' में संतुलन बनाया जाय तो राजनीति को बेहतर समझा जा सकता है।

1.2 वर्तमान राजनीति : राजनीति का मूल अर्थ सिद्धान्त और प्रयोग का समन्वय है। जीवन स्वाभाविक ढंग से गतिमान रहे ऐसा शासन, अनुशासन ही उपयुक्त है। जीवन में सच–झूँठ, प्रेम–घृणा, शोषण–त्याग, नरम–गरम तमाम परिस्थितियाँ होती है, आती है, आ सकती है। ऐसे में बड़ी सूझ–बूझ से एक संतुलित रास्ता ही सही राजनीति है। आज की परिस्थितियाँ विचित्र है। आज सोचकर (सिद्धान्त) करना (प्रयोग) नहीं, करने के बाद सोचना होता है। कथनी–करनी में कोई ताल–मेल नहीं बल्कि यह भी कह सकते हैं आज आदमी जो करता है उसे कहना नहीं और जो कहता है उसे करता नहीं। आज राजनीति में 'नीति' नहीं केवल 'राज' दिखायी देता है। वर्तमान राजनीति के संदर्भ में, ''लोग अपराध से देखते है, समन्दर के इस पार वाले भी, उस पार वाले भी। कहते हैं भारत ने संसार को भाषा दी, संस्कृति दी, कला दी, सभ्यता दी। फिर ऐसे में हम पीछे कैसे रहें ? अब हम देंगे भ्रष्टाचार, प्रजातंत्र का नया तर्क कि हमें भ्रष्टाचार करने दो, हत्यायें करने दो और सरकार चलाने दो।''[3] यह कथन पर्याप्त लगता है।

राजनैतिक प्रदूषण

ऐतिहासिक अध्ययनों से स्पष्ट है कि हमारे पूर्वज 'काम–भावना' (SEX) से नर और नारी के रूपों में एक दूसरे से सम्बन्धित हुए, परिणाम हुआ सन्तान। परिवान बना। क्षुधार्थ शोषण शुरू हुआ। आवश्यकतायें बढ़ी। समाज बना। मानव ने शासन शुरू किया। संघर्ष शुरू किया। फलतः राजनीति का रूप साकार हुआ। समय बढ़ता गया। आदमी तेज होता गया। आवश्यकतायें अनन्त हुई। आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक रूप सामने आया। आज राजनीति हर पल आदमी के साथ है। गाँव की चौपाल संसद बन गयी है। खेतों का भगवान माटी और रोटी की चिंता छोड़ राजनीति में जी रहा है। ज्ञान–खोजी विद्यार्थी और ज्ञान–दाता गुरू राजनीति के दायरे में घूम रहा है। पूरी प्रशासनिक मशीन राजनीति से ईंधन

पाकर गतिशील है।

राजनैतिक प्रदूषण का अर्थ हम इस तरह कर, सकते हैं कि 'राजनीति की प्रकृति में गंदगी आ गयी है।' राजनीति का मूल अर्थ है 'जीवन के प्रायोगिक स्वरूप की कला। जीवन–मूल्य कल्याणकारी हो, शान्तिमय हो, सौहार्द हो तथा परस्पर सुख–दुख की अनुभूति हो। आज राजनीति एक व्यवसाय हो गया है, किसलिये ? 'आत्मविकास' के लिये।

आज प्रजा का शोषण है। प्रजा का कर्तव्य है कि वह 'जो आवाज दे' उसे भेज दे। प्रजा को भेजना ही है। आज प्रजा के प्रतिनिधि अधिकांशतः भेजे नहीं जाते चले जाते हैं। प्रजा 'आह' भी करे तो बदनाम हो जायेगी। यही है हमारा प्रजातंत्र। यही है हमारी भारतीय राजनीति। इसी को हम कह सकते है 'वर्तमान राजनैतिक प्रदूषण'।

2.1 प्रदूषण स्वरूप (भूतकालीन तथ्य) : राजनैतिक प्रदूषण के स्वरूप को समझने के लिये हम भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के एक निबंध की कुछ पंक्तियाँ देखे– ''राजनीति तो गुण्डों का पेशा है, शरीफ आदमियों का नहीं। डाक्टर, व्यापारी, इन्जिनियर, मिस्त्री आदि के लिये ट्रेनिंग, शिक्षण, प्रशिक्षण होता है। पर नेता और राजनीतिज्ञ लोग कैसे बन जाते हैं ? राजनीति के पेशे में नेता बनने के लिये किसी भी ट्रेनिंग की कोई जरूरत नहीं। हर ऐरा गैरा अपने देशवासियों पर शासन करने के लिये समर्थ समझा जाता है। खुदा ने उसको जो थोड़ी बहुत अक़्ल बख़्श रखी है उसी पर उसे पूरा भरोसा है कि वह हुकूमत के स्टीमर को साहिल तक ठेल ही ले जायेगा।'' इसी निबंध में नेहरू जी ने एक अजायब घर की कल्पना किया है जिसमें वर्तमान (तत्कालीन) मिनिस्टरों की मूर्तियाँ रखी जायेगी। इन मूर्तियों को अध्यापक छात्रों को पढ़ायेगा। वह बतायेगा, ''जिस व्यक्ति में सबसे गहरा अज्ञान होता था वही शासन के लिये सबसे योग्य समझा जाता था। हमेशा उसी के सिर पर सेहरा बँधता था जो सच्चाई का पूरी तरह गला घोंट सके और जिस सिद्धान्त पर खड़ा है अच्छी तरह उसकी पींठ में छुरा भोंक सके। इस अजायब घर में भारत के हर सूबे के नुमाइंदे होंगे। सबसे बड़ा हिस्सा 'युक्त प्रान्त' का होगा। इसमें भी होंगे हमारे बाँके नवाब जिन्हें पढ़ने–लिखने के नाम पर बाजारू उपन्यास था। विभाग के बारे में पढ़कर कभी अपनी मौलिकता पर आँच नहीं आने दी। ......और भी बहुत से लोग रखे जायेगें। आने वाली पीढ़ी की जनता को भी आश्चर्य होगा जो इन शेर की खाल ओढ़ने वाले गीदड़ों से शाशित थी।[4]

2.2 प्रदूषण–स्वरूप (वर्तमान कालीन तथ्य) : प्रदूषण की वर्तमान राजनैतिक तश्वीर बनायी जाय तो इसमें जातिवाद, बूथ कैप्चरिंग, आतंक, हत्यायें, विश्वासघात तथा झूँठे वादों को विशेष चटकीले रंगों में रंगा जायेगा। वर्तमान राजनैतिक प्रदूषण–स्वरूप का जो विवरण विगत 21–10–1997 को विधान सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ में उभरा वह भारतीय राजनीति के के इतिहास का अमिट काला धब्बा है। विश्व की राजनीति को भी चौंकाने वाला प्रसंग है। विगत 1996 के चुनाव के बाद उत्तर प्रदेश में लम्बे अरसे तक सरकार का गठन न हो सका। पुनः भाजपा और बसपा के आपसी तालमेल से 21 मार्च 1997 को सुश्री मायावती जी (बसपा) ने मुख्यमंत्री पद संभाला। यह पद भाजपा, बसपा के लिए छः छः माह का तय हुआ। समझौते के अनुसार 21 सितम्बर 1997 को श्री कल्याण सिंह (भाजपा) सरकार की कमान सँभाले। ध्यातव्य है कि समझौते की राजनीति के बाद भी अपने मुख्यमंत्रित्व काल में सुश्री मायावती जी ने अपने अनुसार ही काम किया। भाजपा चुप रही। परिणाम कुछ भयंकर होना ही था। विपछी छटपटाते रहे। बहुत जल्दी ही 'बसपा' ने दिनांक 19–10–1997 को समर्थन ले लिया। 'कांग्रेस' और 'बसपा' टूटी। 27–10–1997 को ही बहुमत सिद्ध हो गया। पुनः गंदगी के कीटाणु कुलबुलाने लगे। 21–02–1998 को लोकतांत्रिक कांग्रेस (कांग्रेस से विघटित दल– नेता श्री नरेश अग्रवाल) ने कल्याण सरकार से समर्थन ले लिया। आनन–फानन में राज्यपाल श्री रोमेश भण्डारी ने सम्पूर्ण विपक्ष द्वारा प्रस्तावित नेता श्री जगदम्बिका पाल जी को उसी दिन मुख्यमंत्री की शपथ दिला दिया। उधर कल्याण सरकार उच्च न्यायालय गयी। तत्काल यथास्थिति (पूर्व की) का आदेश मिला। पुनरवि उत्तर प्रदेश सरकार के दोनों मुख्यमंत्रियों (श्री कल्याण सिंह एवं श्री जगदम्बिका पाल) का संघर्ष सरकारी तंत्र को विचित्र स्थिति में डाल दिया। दूरदर्शन, समाचार पत्रों, एवं पत्रिकाओं ने प्रदेश ही नहीं देश–विदेश तक को इस प्रदूषित राजनीति का दर्शन कराया। सर्वोच्च न्यायालय के अन्तिम आदेश पर पुनः कल्याण सरकार स्थिर हुई। ध्यातव्य है कि यह प्रसंग लोकसभा चुनाव 1998 के एक दिन पूर्व का है जिसमें प्रदूषित राजनीति कितनी निखरी, कहना बेकार होगा।

लोकसभा 1998 का चुनाव सम्पन्न हुआ। किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत न मिला। भाजपा सबसे बड़े दल के रूप में उभरी। भाजपा विरोधी चिल्लाने लगे। ''भाजपा को आगे बढ़ने का मौका नहीं देंगे।''[5] ''भाजपा को सत्ता से रोकने के लिये जहर भी पी लेंगे।''[6] पुनः दिनांक 12–03–1998 को राष्ट्रपति महोदय ने भाजपा को सरकार बनाने के लिये विचार हेतु बुलवाया। मात्र 240 सदस्यों की सूची ही भाजपा दे सकी। 'अन्नाद्रमुक' की नेता सुश्री जयललिता (भाजपा सहयोगी दल) समर्थन में आना–कानी करने लगी। कांग्रेस, संयुक्त मोर्चा, साम्यवादी आदि प्रमुख भाजपा विरोधी दल खुशी में झुम उठे। दिनांक 13–03–1998 को दूरदर्शन पर ''सरकार कौन बनावे ?'' इस प्रकार की वार्ता में संविधान विशेषज्ञ, भूतपूर्व लोकसभा महासचिव डॉ0 सुभाष कश्यप ने कड़ा ''संविधान बनाने वाले यह नहीं जानते थे कि सरकार बनाने के लिये ऐसे लोग आयेंगे जो कुर्सी के भूँखे होंगे, जिनका कोई मानक नहीं होगा।..... राष्ट्रपति सदन से कहे कि अपना नेता चुन के दे।'' डॉ0 कश्यप की आवाज में बुलन्दी थी, चेहरे पर विचित्र आश्चर्य और वर्तमान परिवेश के प्रति एक चिंता। ऐसा मैने देखा और समझा।

सुश्री जयललिता जी के बारे में कहा गया, ''अन्नाद्रमुक की नेता जयललिता को शायद इलहाम नहीं है कि जिस तरह की घटिया सौदेबाजी को आधार बनाकर उन्होंने केन्द्र में नयी सरकार के गठन में गतिरोध पैदा कर दिया है, वह तमिलनाडु के मतदाताओं के साथ विश्वासघात तो है ही, राष्ट्रीय स्तर पर राजनैतिक प्रदूषण की पराकाष्ठा भी है।''[7] थोड़े ही दिनों में जयललिता जी मान गयीं। दिनांक 15–03–1998 को राष्ट्रपति महोदय ने श्री अटलबिहारी वाजपेयी को प्रधानमंत्री नियुक्त किया। दिनांक 19–03–1998 को शपथ ग्रहण सम्पन्न हुआ। शपथ के बाद कहा गया– ''उनका सत्ता सिंहासन काँटों की सेज है। हेगड़े, चौटाला, ममता बनर्जी और जयललिता आदि कल तक भाजपा के विरोधी पर ही जिंदा रहे। आज इनका समर्थन उठाना पड़ रहा है सत्ता के लिये। इनका क्षेत्रीय लाभ जब तक है तब तक साथ है। मन्दिर निर्माण, कट्टर हिन्दू धारा 370 आदि मुद्दों से भाजपा ने समझौता किया है। मुद्दे प्राण होते हैं। यह शुभ नहीं होगा।''[8]

आज की भारतीय राजनीति को संक्षेप में 'राजनैतिक प्रदूषण की भारतीय राजनीति' कहा जाय तो बेवजह नहीं। आज एक विरोध समीकरण बन सकता है– 'भाजपा = कांग्रेस+साम्यवादी दल+जनता दल+समाजवादी+अन्य।' आज सत्ता की छीना–झपटी और काली करतूतों को छिपाने के लिये विचारों का संघर्ष नहीं शरीर का संघर्ष सत्य होता जा रहा है।

3. राजनैतिक प्रदूषण के कारण : आदमी आवास में रहता है। अर्थात एक स्थान (मिट्टी) में रहता है। वहाँ वह परिवार के साथ रहता है। खाता–पीता–जीता है। संघर्ष, प्रेम, मुहब्बत करता है, पूरी पृथ्वी के बारे में सोचता–समझता है। आज मिट्टी प्रदूषित है, पानी, हवा, अन्न सबकुछ प्रदूषित है। हमारा विचार भी प्रदूषित है। अन्न और मन का मेल है। अतः हम पूरी तरह प्रदूषित हैं। हम नेता हैं, प्रशासक हैं, जनता हैं, राष्ट्र हैं, राजनीति है। हमारे इस प्रदूषण का कारण क्या है ? उत्तर में केवल 'हम' हैं। पुनरपि कुछ प्रमुख कारणों को गिनाया जा सकता है। यथा– 1. देश की परतंत्रता 2. स्वार्थ 3. नकारात्मक चिन्तन 4. पद लोलुपता 5. धनार्जन 6. कथनी–करनी 7. चारित्रिक पतन 8. अशिक्षा 9. आत्माध्ययना भाव 10. जातिवाद 11. अपारदर्शिता एवं 12. परिवेश आदि।

हमारा देश शदियों तक परतंत्र रहा। आज हमारे बीच परतंत्र और स्वतंत्र दोनों ही भारत की संताने हैं। राजनीति में भी ऐसी भागीदारी भरपूर है। बूढ़े–बुजुर्ग बताते हैं कि–''अंग्रेज शासन में हम लोग पुल तोड़ते थे, रेलवे लाइन उखाड़ते थे, डाकघर फूँकते थे'' आदि–आदि। ऐसा इसलिये था कि इन चीजों से हमारा कोई लाभ न था। इनसे अंग्रेज लाभ लेते थे। आज हमारे अन्दर उसी प्रकार की भावना जैसे जोर मार रही है। आज मजदूर हड़ताल करता है, विद्यार्थी हड़ताल करता है, अन्य कर्मचारी हड़ताल करते हैं तो अपनी संस्था का काम बंद कर देते है, उसे क्षतिग्रस्त भी करते हैं। संस्था से ही भरपूर चोरी करते है। ऐसा क्यों ? लगता है ऐसे लोग अपने देश की सम्पत्ति को अपना नहीं समझते उसे सरकार की समझते हैं। सरकार जैसे कोई दूसरा है। सरकार तो अपनी है न, हम सब सरकार हैं न, हमारा शासन है न, पर लगता है हमारे अन्दर परतंत्र भारत की सोच जी रही है। राजनेताओं में भी अपने विभाग के प्रति ऐसी ही सोच दिखायी देती है, देश के लिये उनका उत्तरदायित्व नहीं वह तो उनके अपने लिये होता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के दिन ही (15 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि) पंडित जवाहर लाल नेहरू के प्रसिद्ध भाषण (ट्रिस्ट विद् डेस्टिनी) के बाद ही अपने भाषण में डॉ0 राधाकृष्णन ने सरकार को आगाह करते हुए कहा था, ''जब तक हम इस देश की ख्याति को नष्ट करने वाली सत्ता लोलुपता, मुनाफाखोरी, एवं काला बाजारी की प्रवृत्ति से मुक्ति नहीं पा लेते और उच्च पदों से भ्रष्टाचार को मिटा नहीं देते तब तक हम प्रशासनिक दक्षता और जीवनोपयोगी वस्तुओं के उत्पादन एवं वितरण के स्तर में सुधार नहीं जा सकते।[9] स्वार्थ आज हमारे अन्दर बड़े विकृत रूप में शक्तिशाली होता जा रहा है। स्वार्थ का अर्थ है अपना मतलब। (स्व+अर्थ) यह तो आवश्यक है पर यह जब दूसरे का अर्थ अनर्थ कर दे तभी दूषित स्वार्थ है। राजनीति में आज 'हम' बस 'हम' है, हम भारत के नहीं है न भारत हमारा है। कच्छ से कोहिमा तक और काश्मीर से कन्या कुमारी तक भारत से भारतीयता गायब है। निर्वाचित प्रतिनिधि और नौकरशाह निजी स्वार्थो के पोषक सत्ता के सौदागर, जनता के शोषक और जनहित के शत्रु बन गये है।[10]

समाज की सोच पूरी तरह नकारात्मक होती जा रही है। राजनीति में हर दल एक दूसरे के प्रति विरोधी बयान ही देता रहता है। सत्ताधारी दल के विरोधी में ही बोलना, हर कदम का विरोध करना, ही विरोधी पक्ष का मूल धर्म हो गया है। एक ईर्ष्या का परिवेश पनपता जा रहा है। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री रोमेश भण्डारी राजभव से जाने के कुछ पूर्व बोल पड़े– ''साम्प्रदायिक ताक़तो के खिलाफ धर्मनिरपेक्ष शक्तियों को एकजुट करूँगा और फिर देखियेगा।''[11] आज की राजनीति ही नकारात्मक है। ''नकारात्मक राजनीति का अर्थ है आम सहमति की राजनीति में जानबूझकर बाधा खड़ी करना और कलह तथा कटुता की राजनीति को अपनाना।''[12] पद लोलुपता तो राजनीति में चरम सीमा पर पहुँच गयी है। इस राजनैतिक कार्यकर्ता मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री बनना चाहता है। इसका परिणाम होता है आये दिन सरकारों का पतन। इस दिशा में बिहार के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री लालू प्रसाद यादव द्वारा अपनी अर्धांगिनी को मुख्यमंत्री पद पर बैठाना एक महत्वपूर्ण घटना है। धनार्जन आज की भौतिकवादी संस्कृति बन गयी है। राजनीति तो धनार्जन का पर्याय हो गयी है। भारत में हवाला, घोटाला की कला सामने है। ''निर्वाचित प्रतिनिधि और नौकरशाह निजी स्वार्थो के पोषक, सत्ता के सौदागर जनता के शोषक और राजनीति के शत्रु बन बैठे हैं। अन्यायों पर अन्याय अत्याचारों पर अत्याचार, घोटालों पर घोटाले होते रहे लेकिन कार्यपालिका और विधायिका न केवल चुप्पी साधे रहे बल्कि नेताओं और अफसरो ंके कुकृत्यों और भ्रष्ट आचरणों पर पर्दा भी डालते रहे।[13] कथनी और करनी का तालमेल आज असम्भव सा हो गया है। लगता है आज जो कहा जाता है इसे किया नहीं जाता और जो किया जाता है उसे कहा नहीं जाता। नेता बोलता है। भाषण देता है। यह करना उसका व्यक्तित्व है। यहाँ व्यक्तित्व शब्द केवल वाह्य ही है। गरीबों के लिये बड़ी–बड़ी घोषणायें, रोजगार, भय–मुक्त समाज एवं एक सुखी निश्चिन्त भविष्य का भाषण मात्र भाषण होता है। क्रियान्वयन कोसों दूर ही नहीं, कभी नहीं। वस्तुतः आज चारित्रिक पतन है। चारित्रिक पतन का अर्थ है सिद्धान्त हीनता। हमें पद, पैसा, उज्जवल भविष्य जहाँ दिखा हम पहुँच गये। रातों–रात मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री तक बदलते है। सदस्यों की आवाजाही तो तमाशा बनी हुई है। अशिक्षा प्रदूषण के मूल में है। वस्तुतः शिक्षा व्यवहारों में परिवर्तन की प्रक्रिया है। शिक्षा संस्कार बनाती है। शिक्षा एक प्रकाश देती है जिसमें व्यक्ति सबसे अधिक स्वयं को देख सकता है। आज राजनीति में एक निरक्षण, उच्चशिक्षित व्यक्ति को निर्देश देता है। मंत्री बनने के लिये शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं। ऐसे में हम कैसे अपना अध्ययन कर सकते है। अपनी शक्ति, क्षमता को समझना हमारे लिये असम्भव है। हम कुछ भी कर सकते है। परिणाम पश्चाताप। अनर्थ। हाँ, हम दुसरों के अध्ययन में जुटे रहते हैं। हमारा दुःख है कि दूसरा सुखी है। विपक्ष सत्ता–पक्ष का विश्लेषण बस यही करता है कि वह (सत्तापक्ष) कैसे सत्ताच्युत हो। जातिवाद तो आज की राजनीति का पर्याय है। भारतीय राजनीति तो 'सवर्ण', 'अवर्ण' और पिछड़ा वर्ग में जूझ रही है। अल्पसंख्यकों को पार्टियाँ नोच रही है। वस्तुतः श्री वी0पी0 सरकार द्वारा 'मण्डल आयोग' के क्रियान्वयन के पश्चात् जातिवादी राजनीति भभक उठी है। येन–केन प्रकारेण सत्तासीन होना दलों का उददेश्य होता है। अपने चुनावी घोषणा पत्र भी वह भूल सकते हैं सत्ता–सुख के लिये। उनके शासन में अपार दर्शिता ही होगी। केवल संदेह, अटकलें, जोड़–घटाना, एक भय सदा सिंहासन को दोलायमान किये रहता है। इन सभी कारणों का आधार भूत कारण है वर्तमान परिवेश। परिवेश जिसे पर्यावरण कहा जाता है। हमारे चारो तरफ (परि) का घेरा। (आवरण) चतुर्दिक है झूँठ, विश्वासघात, पदलोलुपता, घोर स्वार्थ आत्मकेन्द्रण तथा चारित्रिक पतन। वास्तव में इन समस्त दुर्गुणों की गर्द–गुबार पूरे वायुमण्डल में छा गयी है। ऐसे में कोई भी तन–मन से कैसे स्वच्छ रहेगा? सत्ता–पक्ष विपक्ष के घात–प्रतिशत का आघात सहता हुआ घायल कराहता है, विपक्ष, सत्तापक्ष को पटखनी देने में अपनी पूरी ताकत झोंककर कमजोर हो रहा है। ऐसे प्रदूषित परिवेश में किसी देश की क्या दशा होगी ? राजनीति की इस लड़ाई का क्या अंजाम होगा ? आइये परिणाम देखा जाय।

4. राजनैतिक प्रदूषण के परिणाम : आज देश की राजनीति की

दुर्दशा है। इसका उत्तरदायित्व सर्वाधिक नेताओं पर है और अधिक मतदाताओं पर। वर्तमान परिवेश में राजनीति चूल्हे से लेकर खेत–खरिहान, विद्यालय, कार्यालय तथा समस्त संस्थानों में पसर गयी है। जहाँ भी दो व्यक्ति चर्चा करते हैं वहीं पक्ष–विपक्ष बोलने लगता है। ऐसी राजनैतिक दशा का परिणाम निम्नवत हो सकता है।

1. राजनैतिक अस्थिरता 2. अविश्वास 3. दुर्घटनायें 4. वर्ग–संघर्ष 5. गरीबी 6. बेरोजगारी 7. असुरक्षा 8. राष्ट्र का पिछड़ना तथा 9. भूमण्डलीय अवमूल्यन आदि।

वर्तमान राजनैतिक प्रदूषण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिणाम अस्थिरता के रूप में सामने है। विगत लगभग दो दशकों से अस्थिरता विशेष ध्यातव्य है। वस्तुतः अस्थिरता और अनिश्चतता समान ही है। ''राजनीतिक अनिश्चितता का अर्थ है राजनीतिक अस्थिरता।''[14] भारतीय राजनीति में वर्ष 1977 को लोकसभा (जनता पार्टी शासन) एक स्वर्णिम शासन रहा। वह भी समय से पहले समाप्त हो गयी। 1989 की लोकसभा (जनता दल) भी अल्पकाल में ही दो–दो प्रधानमंत्रियों (श्री बी0पी0 सिंह तथा श्रीह चन्द्रशेखर) के सहारे भी असहाय रही। 1996 की लोकसभा ने तो तीन–तीन प्रधानमंत्रियों (श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री यच0 डी0 देवगौड़ा तथा श्री इन्द्र कुमार गुजराल) को केवल 18 महीनों में ही झेला। सम्प्रति बारहवीं लोक सभा (1998) श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में गतिमान है जिसे चतुर्दिक विरोधी बयार तो झकझोर ही रही है भीतर से भी शीत लहर रह रह कर सिहरन पैदा करती रहती है। ऐसी स्थिति में पूरा देश अविश्वास के झूले में झूल रहा है। भविष्य हो भविष्य है, वर्तमान न भी कुछ कहने में असमर्थ है। हर राजनैतिक दल के अनेक व्यक्तित्व हैं। चुनाव पूर्व का कुछ, जीतने के बाद कुछ तो मंत्री बनने पर कुछ होता है। चल रही सरकार कब गिर जाय, कब नयी बन जाय, कुछ भी कहना कठिन है। वस्तुतः यह सब दुर्घटनाओं को जन्म दे रहा है। दुर्घटना का अर्थ है 'असहज घटना।' जो होना चाहिये वह नहीं होता, अनहोनी होती है। अप्रत्याशित होता है। जो अप्रत्याशित कर सकता है वह जीत जाता है, वह सरकार हो जाता है। जो उचित करता है, करना चाहता है, करने को कहता है वह बेकार है पागल है आउट ऑफ डेट है। वी0पी0 सिंह सरकार द्वारा मण्डल आयोग लागू हो जाने के बाद समूचे देश में न जाने कितने नौजवानों ने आत्मदाह किया, मानसिक विकलांगता के शिकार हुए, साथ ही समाज में सीधे–सीधे तीन वर्ग सामने आ गये। एक वर्ग सुरक्षित हो गया जिसे 'पिछड़ा वर्ग' कहा गया। एक तथा कथित 'अगड़ा वर्ग' है जो अपने आगे इन वर्गों को देख रहा है। वर्ग–संघर्ष का यह मुख्य स्वरूप तो है ही साथ ही इन वर्गों में भी संघर्ष हैं इनमें आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न लोग शेष का शोषण करने में नहीं चूकते। ऐसी स्थिति में गरीब और गरीब होता जा रहा है, गरीबी बढ़ती जा रही है। देश कर्ज में डूबा हैं गरीबी वस्तुतः विधार है। धन से गरीब, गरीब नहीं, विचारों से गरीब सही गरीब है। सरकार गरीबी हटाने का नारा लगाती है, गरीबी हट जाती है। गरीब बढ़ रहे हैं। पूरा राष्ट्र आज गरीब हैं अपनी उत्तम वस्तुयें (चीनी, गेहूँ, चावल, वस्त्र आदि) विदेशों को देकर देश के लिये घटिया वस्तुयें आयात होती है। अधिकांश उत्पादन विदेशी कम्पनियों के हाथ जा रहे हैं। बेरोजगारी की समस्या भी इसी से मिलती–जुलती है। स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों से भारी भीड़ दिशाहीन गतिमान है। युवाओं की ऊर्जा का दुरूपयोग हो रहा है। विद्यार्थियों में प्रारम्भ से ही प्रदूषित राजनीति का ज़हर उड़ेला जा रहा है। वह जिन्दाबाद कहते–कहते अपनी काया को मुर्दा कर रहे है। बेरोजगार युवा पीढ़ी नशा, निराशा और नकारात्मक कृत्यों में मग्न है। राष्ट्र असुरक्षा की भावना से कंपित है। महत्वपूर्ण पदों पर रहकर यथावश्यक उत्तरदायित्व का निर्वाह वही है जो आपको आदेश दिया जा। स्वतंत्र देश में आप अपने काम में स्वतंत्र नहीं। आपने अपने अनुसार किया तो स्थानान्तरण,निलम्बन, पदावनयन जैसे पुरस्कार प्राप्त होंगे।

5. राजनैतिक प्रदूषण का निवारण : किसी भी स्वच्छ वस्तु का गंदा होना स्वभाविक है। गंदगी की सफाई आवश्यक है। आज भारतीय राजनीति का प्रदूषण पराकाष्ठा पर है, ऐसे में इसका समाधान तो सहज ही होगा। पर हमें कुछ सोचना होगा, जो हमारे जीवित होने का प्रमाण है। अतः इस दिशा में निवारण के कुछ निम्नलिखित सुझाव हो सकते हैं।

1. जन–मानस का प्रच्छालन 2. मत–प्रशिक्षण 3. अपराधियों को राजनीति से दूर रखा जाय 4. पद का मूल्य समझा जाय 5. पक्ष–विपक्ष का मूल्यांकन 6. आत्मावलोकन एवं 7. परम्पराओं का मूल्यांकन आदि।

5. उपसंहार

वर्तमान राजनीति से नीति भूत लगती है। यह तो 'राजनीति' (रहस्य नीति) लगने लगी है। इसे ही हम वर्तमान राजनैतिक प्रदूषण कह सकते है। देश के राजनैतिक स्तर पर कहा गया, 'सत्ता की भूँख बढ़ जाने पर राजनीति सिद्धान्त हीन हो जाती है और सत्ता मनोरंजन का माध्यम बन जाती है।[15] राजनीति में प्रदूषण का मूल कारण हुआ सत्ता–प्राप्ति की लालसा, जिसके लिए बहुमत की आवश्यकता अनिवार्य है। इसकी गोद में ही पनपे समाज के अवांछनीय तत्व। दलों की सांठ–गाँठ हुई बाहुबलियों से धनपशुओं से। परिणाम हुआ सशक्त सर्व शक्तिमान हुआ, कमजोर अति निर्बल हुआ और अमीरी–गरीबी के बीच की खाई महासागर बन गयी। ऐसे में सवाल उठता है कि राजनीति में नैतिक पतन को कैसे रोका जाय ? नई शुरूआत कैसे की जाय ? कुछ लोग राजनैतिक व्यवस्था में ही मूलभूत बदलाव बताते है। कुछ दण्ड व्यवस्था को मजबूत करने की बात करते हैं। कुछ नैतिक शिक्षा देने की बात करते है। तो कुछ भगवान से डरने की बात करते हैं। विगत 21–10–1998 को उत्तर प्रदेश विधान सभा में हुई हिंसक घटना की जाँच रिपोर्ट में तीन सुझाव दिये गये– 1. ऐसे अनुशासनात्मक कार्य करेन वाले सदस्यों की सदस्यता समाप्त करने के कानून बनाये जाय। 2. सदस्यों का समुचित प्रशिक्षण हो। 3. राष्ट्रीय स्तर पर विचार हो। वस्तुतः आज आस्था चाहिये। एक बार एक शिष्य ने 'कन्फ्यूसियस' से पूछा– 'देश के लिये किन चीजों की आवश्यकता होती है ?' उत्तर– 'सेना, अनाज और आस्था।' 'शिष्य'–' अगर एक को छोड़ना पड़े तो किसे छोड़ा जा सकता है ?' उत्तर– 'अनाज को, आस्था को किसी भी दशा में नहीं छोड़ा जा सकता।''[16] सच्ची आस्था सबकुछ दे सकती है। यह वह देश है जहाँ पत्थर के टुकड़े में भगवान देखे जाते है। पानी की हर बूँद मतें गंगा माँ देखी जाती है। मिट्टी के हर कण में भारत माँ देखी जाती है। फिर क्या चाहिये ? ऐसी आस्था सम्पन्न व्यक्ति को देते देते जी ऊब जायेगा। अपने लिये जीना राजनीति नहीं। माटी की काया को माटी के लिये जीने दो। माटी के साथ यारी करो, गद्दारी नहीं। माटी से बना तन माटी में मिले तो सोना बन जाये। इतिहास में चमकने का काम हो। हमारे आदर्श हैं– सुभाष, पटेल, राजेन्द्र प्रसाद, सम्पूर्णानन्द तथा नेहरू आदि। भारतीय राजनीति के ऐसे नाम हैं जिन्हें उच्चारण करने से ही 'वन्देमातरम्' प्रतिध्वनित होता है, जिनके चित्र देखने मात्र से ही भारत माता साकार हो जाती है

तथा जिनका नाम सुनते ही तिरंगे की हवा से तन–मन शीतल हो जाता हैं ऐसे बलिदानी, सच्चे और सतत् प्रमुदित भारतीय सरोवर में काया कल्मष का प्रच्छालन करे। प्रदूषित राजनीति धुलकर मौलिक भारत भाष्कर को प्रणाम करे।

6. सन्दर्भ

1. क्विंसी राइट – 'द स्टडी ऑफ इण्टररिलेशन (न्यूयार्क) 1953, पृष्ठ 130.
2. टी0 ब्रिन्नान – 'पोलिटिक्स एण्ड गवर्नमेंट इन ब्रिटेन', 1972, पृष्ठ 4.
3. रामकुमार भ्रमर – 'लोकतंत्र का नया दर्शन'–समकालीन साहित्य समाचार–किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 12.
4. पंडित सूर्य नारायण ब्यास – 'विक्रम' 1932, स्रोत–हिन्दुस्तान–6.03.1998, पृष्ठ 8.
5. श्रीयुत मुलायम सिंह यादव – 'दैनिक जागरण' 12.03.1998
6. श्री लालू प्रसाद यादव – 'दैनिक जागरण' 10.03.1998
7. श्री सम्पादकीय– 'आज' 15.03.1998
8. कितने अटल रहेगें अटल – 'आज' 16.03.1998
9. पालिटिक्स इण्डिया – नवम्बर 1998, पृष्ठ 25 'विमोट पब्लिशर्स नई दिल्ली'।
10. प्रतियोगिता पीयूष – 1997, पृष्ठ 3 तथा 11, 'पीयूष प्रकाशन इलाहाबाद (उ0प्र0)।
11. दैनिक जागरण – 18.03.1998
12. दैनिक जागरण – 17.03.1998
13. प्रतियोगिता पीयूष – पृष्ठ 11
14. सम्पादकीय – 'दैनिक जागरण' 17.03.1998
15. श्री पी0वी0 नरसिंहा राव –'दि इन साइडर' ।
16. प्रतियोगिता पीयूष– 1997